

سُورَةُ الْجُمُعَةِ

Surah 62 — Al-Jumu'a (Friday) • Medinan • 11 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ
الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है (सब) खुदा की तस्बीह करती हैं जो (हकीमी) बादशाह पाक ज़ात ग़ालिब
हिकमत वाला है

2

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ

वही तो जिसने जाहिलों में उन्हीं में का एक रसूल (मोहम्मद) भेजा जो उनके सामने उसकी आयतें पढ़ते और उनको पाक करते
और उनको किताब और अक़ल की बातें सिखाते हैं अगरचे इसके पहले तो ये लोग सरीही गुमराही में (पड़े हुए) थे

3

وَأَخْرَجَ مِنْهُمْ لِمَا يَلْحَقُوا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

और उनमें से उन लोगों की तरफ़ (भेजा) जो अभी तक उनसे मुलहिक्क नहीं हुए और वह तो ग़ालिब हिकमत वाला है

4

ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

खुदा का फज़ल है जिसको चाहता है अता फरमाता है और खुदा तो बड़े फज़ल (व करम) का मालिक है

5

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ۚ بِئْسَ
مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

जिन लोगों (के सरो) पर तौरत लदवायी गयी है उन्होने उस (के बार) को न उठाया उनकी मिसाल गधे की सी है जिस पर बड़ी
बड़ी किताबें लदी हों जिन लोगों ने खुदा की आयतों को झुठलाया उनकी भी क्या बुरी मिसाल है और खुदा ज़ालिम लोगों को
मंज़िल मकसूद तक नहीं पहुँचाया करता

6

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا۟ ۖ إِن زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِن دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوْا۟ ۖ الْمَوْتَ ۖ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ यहूदियों अगर तुम ये ख्याल करते हो कि तुम ही खुदा के दोस्त हो और लोग नहीं तो अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो मौत की तमन्ना करो

7

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُۥ ۖ أَبَدًا ۖ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيهِمْ ۖ وَاللّٰهُ عَلِيمٌۢ بِالظَّالِمِينَ

और ये लोग उन आमाल के सबब जो ये पहले कर चुके हैं कभी उसकी आरजू न करेंगे और खुदा तो ज़ालिमों को जानता है

8

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ ۖ مُلْقِيكُمْ ۖ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मौत जिससे तुम लोग भागते हो वह तो ज़रूर तुम्हारे सामने आएगी फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले (खुदा) की तरफ लौटा दिए जाओगे फिर जो कुछ भी तुम करते थे वह तुम्हें बता देगा

9

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ۖ إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِن يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا۟ ۖ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا۟ ۖ الْبَيْعَ ۖ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌۭ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

ऐ ईमानदारों जब जुमा का दिन नमाज़ (जुमा) के लिए अज़ान दी जाए तो खुदा की याद (नमाज़) की तरफ दौड़ पड़ो और (खरीद) व फरोख्त छोड़ दो अगर तुम समझते हो तो यही तुम्हारे हक में बेहतर है

10

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا۟ ۖ فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا۟ ۖ مِن فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا۟ ۖ اللَّهَ كَثِيرًا ۖ لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में (जहाँ चाहो) जाओ और खुदा के फज़ल (अपनी रोज़ी) की तलाश करो और खुदा को बहुत याद करते रहो ताकि तुम दिली मुरादें पाओ

وَإِذَا رَأَوْا تِجْرَةً أَوْ لَهْوًا أَنْفَضُوا^❶ إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا^❷ ۚ قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ^❸ مِّنَ اللَّهِوِ وَمِنَ التِّجْرَةِ^❹ ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ

और (उनकी हालत तो ये है कि) जब ये लोग सौदा बिकता या तमाशा होता देखें तो उसकी तरफ दूट पड़े और तुमको खड़ा हुआ छोड़ दें (ऐ रसूल) तुम कह दो कि जो चीज़ खुदा के यहाँ है वह तमाशे और सौदे से कहीं बेहतर है और खुदा सबसे बेहतर रिज़क देने वाला है